www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 12, 9-11

Article ID: 240

सरसों की उन्नतशील खेती

कप्तान बाबू* एवं डॉ. विशुद्धा नंद**

*(शोध छात्र)
**(सहायक प्राध्यापक)
शस्य विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश-224229

सरसों क्रूसीफेरी (ब्रैसीकेसीकुल का (द्विबीजपत्री, एकवर्षीय शाक जातीय पौधा है। इसका वैज्ञानिक नाम ब्रेसिका कम्प्रेसटिस है। पौधे की ऊँचाई १ से ३ फुट होती है। इसके तने में शाखाप्रशाखा होते हैं। प्रत्येक पर्व सन्धियों पर एक - सामान्य पत्ती लगी रहती है। पत्तियाँ सरल, एकान्त आपाती, बीणकार होती हैं जिनके किनारे अनियमित, शीर्ष नुकीले, शिराविन्यास जालिकावत होते हैं। सरसों की खेती कृषकों के लिए बहुत लोकप्रिय होती जा रही है क्योंकि इससे कम सिंचाई व लागत से अन्य फसलों की अपेक्षाकृत अधिक लाभ प्राप्त हो रहा है।

जलवायु - सरसों की फसल के लिए ठंडी जलवायु की आवश्यकता होती है। भारत में इसकी खेती रबी के मौसम में की जाती है। इसके लिए औसत तापमान 26 से 28 डिग्री सेंटीग्रेड काफी उपयुक्त होती है। सरसों की बुआई के वक्त 15 से 25 सेंटीग्रेड और कटाई के समय 25 से 35 डिग्री तापमान की आवश्यकता होती है।

भूमि की तैयारी – सरसों की खेती के लिए खेत की तैयारी सबसे पहले मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करनी चाहिए, इसके पश्चात तीन जुताईयाँ देशी हल या कल्टीवेटर से करना चाहिए, इसकी जुताई करने के पश्चात पाटा लगा कर खेत को समतल करना अति आवश्यक हैं|

उन्नत किस्मे

समय पर बुवाई वाली सिंचित क्षेत्र की किस्में-

किस्में	पकाव अवधि (दिन)	उपज (कि.ग्रा. / हक्टे.)	तेल (प्रतिशत)	पैदावार के लिए उपयुक्त क्षेत्र
पूसा बोल्ड	110-140	2000-2500	40	राजस्थान, गुजरात, दिल्ली, महाराष्ट्र
पूसा जयकिसान	155-135	2500-3500	40	गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान

संकर किस्में

किस्में	पकाव अवधि (दिन)	उपज (कि.ग्रा./है.)	तेल (प्रतिशत)	पैदावार के लिए उपयुक्त क्षेत्र
एन आर सी एच बी 506	130-140	1550-2542	41	उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पूर्वी राजस्थान
डी एम एच 1	145-150	1782-2249	39	पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान

असिंचित क्षेत्र के लिए किस्में-

किस्में	पकाव अवधि (दिन)	उपज (.है/.ग्रा.कि)	तेल (प्रतिशत)	पैदावार के लिए उपयुक्त क्षेत्र
अरावली	130-135	1200-1500	42	राजस्थान, हरियाणा
गीता	145-150	1700-1800	40	पंजाब, हरियाणा, राजस्थान

अगेती बुआई तथा कम समय में पकने वाली किस्में-

किस्में	पकाव अवधि (दिन)	उपज (.है/.ग्रा.कि)	तेल (प्रतिशत)	पैदावार के लिए उपयुक्त क्षेत्र
पूसा अग्रणी	110-115	1500-1800	40	दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान
पूसा मस्टर्ड 27	115-120	1400-1700	42	उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उतराखंड, राजस्थान

देर से बोई जाने वाली किस्में-

किस्में	पकाव अवधि (दिन)	उपज (.है/.ग्रा.कि)	तेल (प्रतिशत)	पैदावार के लिए उपयुक्त क्षेत्र
एन आर सी एच बी 101	120-125	1200-1450	40	उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान

बीजोपचार – सरसों की फसल के लिए बीज जनित रोगों की सुरक्षा हेतु 2 से 5 ग्राम थीरम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके बोना चाहिए।

बुवाई के समय- सरसों की बुवाई का उपयुक्त समय सितम्बर के अंतिम सप्ताह से अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तक है, सरसों की बुवाई देशी हल के पीछे 5 से 6 सेंटीमीटर गहरे कूडो में 45 सेंटीमीटर की दूरी पर करना चाहिए।

बीजदर- सिंचित क्षेत्रों में सरसों की फसल की बुवाई के लिए 5 से 6 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टर के दर से प्रयोग करना चाहिए।

उर्वरक – सरसों की खेती के लिए 60 कुन्तल गोबर की सड़ी हुई खाद की बुवाई से पूर्व अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देना चाहिए तथा सिंचित दशा में 120 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस तथा 60 किलोग्राम पोटाश तत्व के रूप में प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करते हैं, नाइट्रोजन की आधी मात्रा, फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई से पहले, अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देना चाहिए, शेष आधी नाइट्रोजन की मात्रा बुवाई के 25 से 30 दिन बाद टापड़ेसिग रूप में प्रयोग करना चाहिए।

सिंचाई- सरसों की फसल में पहली सिंचाई फूल आने के समय तथा दूसरी सिंचाई फलियाँ में दाने भरने की अवस्था में करना चाहिए, यदि जाड़े में वर्षा हो जाती है, तो

दूसरी सिंचाई न भी करें तो उपज अच्छी प्राप्त हो जाती है।

खतपतवार नियंत्रण – सरसों की खेती में बुवाई के 15 से 20 दिन बाद घने पौधों को निकाल कर उनकी आपसी दूरी 15 सेन्टीमीटर कर देनी चाहिए, खरपतवार नष्ट करने के लिए एक निराईगुड़ाई सिंचाई के पहले और दूसरी सिंचाई के बाद करें रसायन द्वारा खरपतवार नियंत्रण के लिए पेंडामेथालिन 30 ईरसायन .सी. की3.3 लीटर मात्रा की प्रति हैक्टर की दर से 800 से 1000 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए, बुवाई के 2-3 दिन अंतर पर यह छिड़काव करना अति आवश्यक है।

रोग एवं कीट प्रबन्धन

रोग

सरसों की फसल में प्रमुख रोग जैसे आल्टरनेरिया, पत्ती झुलसा रोग, सफ़ेद किट्ट रोग, चूर्णिल आसिता रोग तथा तुलासिता रोग फसल में लगते हैं, इन रोगों के नियत्रण के लिए मेन्कोजेब 75 प्रतिशत नामक रसायन की 800-1000 लीटर पानी में मिलकर छिड़काव करना चाहिए।

कीट

सरसों के प्रमुख कीट-

चेंपा या माहूः सरसों में माहू पंखहीन या पंखयुक्त हल्के स्लेटी या हरे रंग के 1.5-3.0 मिमी. लम्बे चुभने एवम चूसने मुखांग वाले छोटे कीट होते है। इस कीट के शिशु एवं प्रौढ़ पौधोंके कोमल तनों, पत्तियों, फूलो एवम नई फलियों से रस चूसकर उसे कमजोर एवम छतिग्रस्त तो करते ही है साथसाथ रस चूसते समय - पत्तियोपेर मधुस्राव भी करते है। इस मधुस्राव पर काले कवक का प्रकोप हो जाता है तथा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया बाधित हो जाती है। इस कीट का प्रकोप दिसम्बरर्च जनवरी से लेकर मा- तक बना रहता है।

प्रबन्धन

१. माहू के प्राकृतिक शत्रुओ का संरक्षण करना चाहिए।

२. प्रारम्भ में प्रकोपित शाखाओं को तोडकर भूमि में गाड़ देना चाहिए।

३. माहू से फसल को बचाने के लिए कीट नाशी डाईमेथोएट 30 ई. सी.1 लीटर या मिथाइल ओ डेमेटान 25 ई. सी.1 लीटर या फेंटोथिओन 50 ई . सी .1 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर 700-800 लीटर पानी में घोलकर छिडकाव सायंकाल करना चाहिए।

आरा मक्खीः आरा मक्खी कीट की सूड़िया काले स्लेटी रंग की होती है जो पत्तियों को किनारों से अथवा पत्तियों में छेद कर तेजी से खाती है, तीव्र प्रकोप की दशा में पूरा पौधा पत्ती विहीन हो जाता है

रोकथाम- मेलाथियान 50 ई.सी. मात्रा को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर में छिड़काव करना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर दुबारा छिड़काव करना चाहिए।

कटाई और मड़ाई - सरसों की फसल में जब 75% फलियाँ सुनहरे रंग की हो जाए, तब फसल को काटकर, सुखाकर या मड़ाई करके बीज अलग कर लेना चाहिए, सरसों के बीज को अच्छी तरह सुखाकर ही भण्डारण करना चाहिए।

उपज – असिंचित क्षेत्रों में इसकी पैदावार 20 से 25 कुन्तल तक तथा सिंचित क्षेत्रों में 25 से 30 कुन्तल प्रति हैक्टर तक प्राप्त हो जाती हैं।